REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 9 | JUNE - 2026

शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में अंधविश्वास : ग्रामीण समाज का अध्ययन

रवीन्द्र कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. लक्ष्मीकान्त चन्देला
सह–प्राध्यापक हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय ग्रामीण समाज का सांस्कृतिक जीवन परम्पराओं, लोकविश्वासों, धार्मिक मान्यताओं तथा सामुदायिक अनुभवों से निर्मित हुआ है। इन मान्यताओं ने सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक निरन्तरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किन्तु समय के साथ अनेक विश्वास ऐसे भी विकसित हुए जो तर्क, वैज्ञानिक दृष्टि और मानवीय विवेक के स्थान पर भय, रूढ़ि तथा अज्ञान पर आधारित रहे। यही विश्वास जब सामाजिक व्यवहार और निर्णयों को नियंत्रित करने लगते हैं, तब वे अंधविश्वास का रूप धारण कर लेते हैं। ग्रामीण जीवन में अंधविश्वास केवल धार्मिक या सांस्कृतिक आस्था का विषय नहीं रह जाता, बल्कि वह सामाजिक संरचना, शक्ति–संतुलन और शोषण की प्रक्रियाओं से भी जुड़ जाता है। समकालीन हिन्दी कथा–साहित्य में शिवमूर्ति ने इस यथार्थ को अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। शिवमूर्ति का कथा–साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन की बहुआयामी समस्याओं और अंतर्विरोधों का सशक्त दस्तावेज है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश का चित्रण केवल प्रकृति, लोकसंस्कृति और सामाजिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें व्याप्त रूढ़ियों, मिथकों, अंधविश्वासों तथा उनके सामाजिक प्रभावों का भी गहन विश्लेषण मिलता है। लेखक ने यह दिखाया है कि अंधविश्वास अनेक बार सामाजिक शोषण, आर्थिक दोहन तथा मानसिक दासता का माध्यम बन जाता है। विशेष रूप से अशिक्षा, निर्धनता और सामाजिक पिछड़ेपन से ग्रस्त वर्ग अंधविश्वासों के प्रभाव में आकर अपने अधिकारों और वास्तविक समस्याओं से दूर हो जाते हैं।

मुख्य शब्द – भारती, ग्रामीण समाज, लोकविश्वासों, धार्मिक मान्यता, वैज्ञानिक दृष्टि एवं अंधविश्वास।

प्रस्तावना –

हिंदी कथा–साहित्य में शिवमूर्ति का नाम उन महत्वपूर्ण कथाकारों में लिया जाता है जिन्होंने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके कथा–साहित्य में भारतीय गाँवों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण मिलता है। शिवमूर्ति ने अपने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण समाज में व्याप्त शोषण, असमानता, अंधविश्वास, कुरीतियों और कुप्रथाओं को उजागर करते हुए समाज के वंचित एवं पीड़ित वर्ग की समस्याओं को केंद्र में रखा है। उनकी रचनाएँ केवल ग्रामीण जीवन का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उसमें निहित संघर्ष, प्रतिरोध और मुक्ति की आकांक्षा को भी अभिव्यक्त करती हैं।

ग्रामीण समाज भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार रहा है, किंतु समय के साथ इसमें अनेक सामाजिक विकृतियाँ भी विकसित हुई हैं। अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, रूढ़िवादिता तथा विभिन्न प्रकार की कुप्रथाएँ ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती रही हैं। इन समस्याओं के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग शोषण और उत्पीड़न का शिकार बनता है। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में इन यथार्थ स्थितियों को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। वे सामाजिक बुराइयों की पहचान कराते हुए उनके विरुद्ध जागरूकता और परिवर्तन की चेतना का निर्माण करते हैं।

शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में मुक्ति चेतना एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उपस्थित है। यह मुक्ति केवल सामाजिक बंधनों से ही नहीं, बल्कि मानसिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गुलामी से भी संबंधित है। उनके पात्र अन्याय, शोषण और रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। विशेष रूप से स्त्रियाँ, दलित, किसान और श्रमिक वर्ग उनके साहित्य में अपने अधिकारों और सम्मान के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं। यह संघर्ष ही मुक्ति चेतना का आधार बनता है। विशेष रूप से अंधविश्वास, कुरीतियाँ और कुप्रथाओं जैसे सामाजिक तत्वों के चित्रण तथा उनके विरुद्ध उभरती चेतना का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शिवमूर्ति का साहित्य किस प्रकार ग्रामीण समाज की वास्तविक समस्याओं को सामने लाकर सामाजिक परिवर्तन और मानवीय मुक्ति की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से उनका कथा–साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थ और जनचेतना का एक सशक्त दस्तावेज सिद्ध होता है।

मुक्ति चेतना का मूल उद्देश्य मनुष्य को उन सभी बंधनों से मुक्त करना है जो उसके स्वतंत्र चिंतन, आत्मसम्मान और विकास में बाधक बनते हैं। अंधविश्वास भी ऐसा ही एक बंधन है, जो व्यक्ति की तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टि को सीमित करता है। शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में मुक्ति चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम अंधविश्वासों के विरुद्ध जागरूकता और प्रतिरोध के रूप में दिखाई देता है। उनके पात्र अनेक बार सामाजिक रूढ़ियों, झूठे धार्मिक आडंबरों तथा अंधमान्यताओं का सामना करते हुए अपने विवेक और अनुभव के आधार पर जीवन को समझने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें मानसिक और सामाजिक मुक्ति की ओर अग्रसर करती है।

विश्लेषण –

शिवमूर्ति की रचनाओं में ग्रामीण समाज के ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं जहाँ अंधविश्वास का उपयोग प्रभुत्वशाली वर्गों द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए किया जाता है। धार्मिक कर्मकाण्ड, चमत्कारवादी धारणाएँ, भाग्यवाद तथा लोक–रूढ़ियाँ कई बार सामाजिक अन्याय और असमानता को बनाए रखने का साधन बन जाती हैं। लेखक इन स्थितियों का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि वास्तविक मुक्ति केवल आर्थिक अथवा सामाजिक परिवर्तन से संभव नहीं है, बल्कि उसके लिए मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता भी आवश्यक है। इसलिए उनकी रचनाओं में अंधविश्वास के विरुद्ध संघर्ष सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया का अंग बनकर उभरता है।

शिवमूर्ति की कथा–दृष्टि वैज्ञानिक चेतना, मानवीय विवेक और सामाजिक जागरूकता को महत्व देती है। उनके पात्र जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान तर्क, अनुभव और सामूहिक संघर्ष में खोजते हैं, न कि अंधविश्वासों और मिथ्या धारणाओं में। इस प्रकार उनका कथा–साहित्य ग्रामीण समाज में व्याप्त अंधविश्वासों की आलोचनात्मक पड़ताल करते हुए मुक्ति चेतना के विकास की दिशा को रेखांकित करता है।

समकालीन हिन्दी कथा–साहित्य में शिवमूर्ति ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने ग्रामीण जीवन की जटिलताओं, अंतर्विरोधों तथा सामाजिक यथार्थ को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। ''उनके कथा–साहित्य में ग्रामीण परिवेश केवल प्राकृतिक अथवा भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक रूढ़ियों, धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वासों से निर्मित एक जीवंत संसार है। शिवमूर्ति का रचनाकार मन उन अंधविश्वासों को गहराई से पहचानता है जो ग्रामीण समाज को विकास और प्रगतिशील चेतना से दूर रखते हैं। उनके साहित्य में मुक्ति चेतना का स्वर इसी कारण महत्वपूर्ण हो उठता है क्योंकि वे अंधविश्वास, पाखंड और रूढ़ियों के विरुद्ध तर्क, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना का निर्माण करते हैं।''[1] उनके पात्र सामाजिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा रखते हैं और परम्परागत अंधविश्वासों को चुनौती देते हुए एक नए समाज की कल्पना करते हैं।

शिवमूर्ति की प्रसिद्ध कहानी 'तिरिया चरित्तर' अंधविश्वास और रूढ़ सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध मुक्ति चेतना का सशक्त उदाहरण है। ''कहानी की नायिका विमली एक श्रमशील और आत्मनिर्भर ग्रामीण स्त्री है, किन्तु उसका ससुर बिसराम धार्मिक आडंबरों और सामाजिक प्रतिष्ठा का सहारा लेकर उसके साथ दुष्कर्म करता है। घटना के पश्चात गाँव की पंचायत सत्य की खोज करने के बजाय परम्परागत मान्यताओं और पुरुषवादी सोच के आधार पर विमली को ही दोषी ठहराती है। पंचायत का निर्णय न्याय पर नहीं, बल्कि उस अंधविश्वासी धारणा पर आधारित है कि स्त्री स्वभावतः अविश्वसनीय होती है। विमली का प्रतिरोध और उसका संघर्ष इस रूढ़ मानसिकता के विरुद्ध मुक्ति चेतना का उद्घोष है।''[2] शिवमूर्ति यहाँ यह स्थापित करते हैं कि अंधविश्वास और परम्परागत पूर्वाग्रह सामाजिक न्याय के सबसे बड़े अवरोधक हैं।

'अकालदंड' कहानी में ग्रामीण समाज में व्याप्त धार्मिक पाखंड और सत्ता–समर्थित अंधविश्वास का चित्रण मिलता है। ''अकालग्रस्त गाँव की निर्धन स्त्रियाँ राहत और सहायता की अपेक्षा करती हैं, किन्तु प्रशासनिक तंत्र तथा स्थानीय प्रभुत्वशाली वर्ग उनके शोषण में संलग्न दिखाई देता है। कहानी की नायिका सुरजी जब सचिव के यौन–शोषण का प्रतिकार करती है तो वह उस मानसिकता को चुनौती देती है जो स्त्रियों को भाग्य, कर्म और नियति के नाम पर अत्याचार सहने के लिए विवश करती है। सुरजी का विद्रोह अंधविश्वासी समर्पण के स्थान पर संघर्ष और आत्मरक्षा की चेतना का प्रतीक बन जाता है।''[3]

'कुच्ची का कानून' में शिवमूर्ति ने स्त्री–जीवन से जुड़े अनेक अंधविश्वासों और रूढ़ सामाजिक धारणाओं को प्रश्नांकित किया है। ''कहानी की नायिका कुच्ची विधवा होने के बाद समाज द्वारा निर्धारित मर्यादाओं को स्वीकार करने से इंकार करती है। ग्रामीण समाज यह मानता है कि स्त्री की कोख और उसकी देह पर केवल पुरुष का अधिकार है, किंतु कुच्ची इस अंधविश्वासी और पितृसत्तात्मक सोच का तार्किक प्रतिवाद करती है। पंचायत में उपस्थित तथाकथित धर्मरक्षक स्मृतियों, पुराणों और परम्पराओं का हवाला देकर उसे अपराधी सिद्ध करना चाहते हैं, परन्तु कुच्ची अपनी तार्किकता और आत्मविश्वास से उन्हें निरुत्तर कर देती है। उसकी चेतना स्त्री–मुक्ति और वैचारिक स्वतंत्रता का प्रतीक है।''[4]

'ख्वाजा, ओ मेरे पीर' में ग्रामीण समाज के धार्मिक विश्वासों और चमत्कारवादी मानसिकता का चित्रण मिलता है। ''कहानी के पात्र अपनी समस्याओं के समाधान के लिए तर्क और संघर्ष की अपेक्षा पीर–फकीरों तथा चमत्कारों पर अधिक भरोसा करते हैं। शिवमूर्ति इस मानसिकता को चित्रित करते हुए संकेत देते हैं कि वास्तविक मुक्ति किसी अलौकिक शक्ति से नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और आत्मसंघर्ष से प्राप्त होती है।''[5]

उपन्यासों में भी अंधविश्वास के विरुद्ध मुक्ति चेतना का स्वर अत्यंत मुखर है। 'त्रिशूल' में धार्मिक कट्टरता और सांप्रदायिक अंधविश्वासों का गहन चित्रण मिलता है। ''उपन्यास के शास्त्री जी धर्म और संस्कृति के नाम पर समाज में विभाजन की मानसिकता विकसित करते हैं। महमूद जैसे पात्र के प्रति उनका व्यवहार धार्मिक पूर्वाग्रहों से संचालित है। शिवमूर्ति स्पष्ट करते हैं कि सांप्रदायिकता स्वयं एक प्रकार का सामाजिक अंधविश्वास है, जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है। इसके विपरीत पाले जैसे पात्र तर्क, मानवीयता और सामाजिक समरसता के पक्षधर हैं। इस प्रकार उपन्यास में मुक्ति चेतना सांप्रदायिक अंधविश्वासों के विरोध के रूप में अभिव्यक्त होती है।''[6]

'तर्पण' उपन्यास में वर्ण–व्यवस्था और जातिगत श्रेष्ठता के मिथक को अंधविश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। र''जपतिया, पियारे, भाईजी तथा दलित समुदाय के अन्य पात्र इस धारणा को अस्वीकार करते हैं कि जन्म के आधार पर कोई व्यक्ति श्रेष्ठ या हीन हो सकता है। सदियों से चली आ रही मनुवादी व्यवस्था को वे चुनौती देते हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। यहाँ मुक्ति चेतना सामाजिक समानता और आत्मसम्मान के रूप में विकसित होती है। शिवमूर्ति यह स्पष्ट करते हैं कि जाति–आधारित भेदभाव किसी धार्मिक सत्य का नहीं, बल्कि अंधविश्वास और सत्ता–प्रेरित मिथक का परिणाम है।''[7]

'आखिरी छलांग' में किसान जीवन से जुड़े अंधविश्वासों तथा भाग्यवाद का चित्रण मिलता है। ''उपन्यास का नायक पहलवान आर्थिक संकटों, कर्ज और सामाजिक दबावों से जूझता है। अनेक ग्रामीण पात्र उसकी समस्याओं का कारण भाग्य, ग्रह–दशा अथवा पूर्वजन्म के कर्मों को मानते हैं, किन्तु पहलवान धीरे–धीरे समझता है कि उसकी दुर्दशा के पीछे सामाजिक और आर्थिक संरचनाएँ अधिक उत्तरदायी हैं।''[8] इस प्रकार उपन्यास में भाग्यवाद के स्थान पर यथार्थबोध और संघर्ष की चेतना विकसित होती है।

शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में ग्रामीण समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। गाँवों में शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना के अभाव के कारण लोग टोना–टोटका, झाड़–फूँक, भूत–प्रेत, ग्रह–नक्षत्र तथा कर्मकांडों पर अत्यधिक विश्वास करते हैं। इन अंधविश्वासों का लाभ उठाकर तथाकथित धर्मगुरु, ओझा और पाखंडी लोग ग्रामीण जनता का आर्थिक तथा मानसिक शोषण करते हैं।

शिवमूर्ति अपनी कहानियों में दिखाते हैं कि अंधविश्वास केवल धार्मिक विश्वास का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक शोषण का एक माध्यम भी बन जाता है। विशेषकर महिलाएँ, दलित और गरीब वर्ग इसके सबसे बड़े शिकार होते हैं। लेखक इन परिस्थितियों को उजागर करते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा और जागरूकता को मुक्ति का साधन मानते हैं। उनके पात्र धीरे–धीरे अंधविश्वासों का विरोध करते हैं और तर्कशीलता की ओर अग्रसर होते दिखाई देते हैं। यही विरोध मुक्ति चेतना का प्रारंभिक स्वरूप है।

शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में ग्रामीण समाज की अनेक कुरीतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। जातिवाद, छुआछूत, स्त्री–विरोधी मानसिकता, दहेज प्रथा, अशिक्षा और सामाजिक रूढ़ियाँ गाँव के जीवन को प्रभावित करती हैं। इन कुरीतियों के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग सम्मानजनक जीवन से वंचित रह जाता है।

शिवमूर्ति ने विशेष रूप से स्त्रियों और निम्नवर्गीय लोगों की स्थिति को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ केवल पीड़ित पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाली चेतनाशील व्यक्तित्व भी हैं। वे सामाजिक बंधनों को चुनौती देती हैं और अपने अस्तित्व की पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं। कुरीतियों के विरुद्ध यह संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का संकेत है। शिवमूर्ति का साहित्य यह संदेश देता है कि शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय के माध्यम से ही इन कुरीतियों से मुक्ति संभव है।

ग्रामीण समाज में व्याप्त कुप्रथाएँ शिवमूर्ति के कथा–साहित्य का एक महत्वपूर्ण विषय हैं। बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री उत्पीड़न, जातीय शोषण, सामंती अत्याचार तथा आर्थिक शोषण जैसी समस्याएँ उनकी रचनाओं में प्रमुखता से उभरती हैं। ये कुप्रथाएँ व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा को बाधित करती हैं। शिवमूर्ति इन कुप्रथाओं को केवल सामाजिक समस्या के रूप में नहीं देखते, बल्कि इन्हें सत्ता और वर्चस्व की मानसिकता से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों में सामंती शक्तियाँ और प्रभावशाली वर्ग कमजोर वर्गों का शोषण करते हैं, किंतु शोषित वर्ग भी धीरे–धीरे प्रतिरोध की चेतना विकसित करता है।

शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में मुक्ति चेतना बहुआयामी रूप में दिखाई देती है। यह चेतना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक सभी स्तरों पर सक्रिय है। उनके पात्र रूढ़ियों, अंधविश्वासों और अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। विशेष रूप से स्त्री पात्र आत्मसम्मान, अधिकार और स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हैं। मुक्ति चेतना का अर्थ केवल बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना भी है। शिवमूर्ति के साहित्य में यह चेतना जनसामान्य को जागरूक बनाने और परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का कार्य करती है। यही कारण है कि उनका साहित्य सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ परिवर्तनकारी दृष्टि भी प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिवमूर्ति के कथा–साहित्य में अंधविश्वास केवल धार्मिक मान्यता का प्रश्न नहीं है, बल्कि वह सामाजिक शोषण, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता और सांप्रदायिकता से जुड़ा हुआ है। उनकी कहानियों की विमली, सुरजी, कुच्ची तथा उपन्यासों के महमूद, रजपतिया, पियारे और पहलवान जैसे पात्र अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए मुक्ति चेतना के वाहक बन जाते हैं। शिवमूर्ति का साहित्य ग्रामीण समाज में तर्कशीलता, आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना का साहित्य है। उनके यहाँ मुक्ति चेतना का अर्थ केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं, बल्कि उन समस्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों से मुक्ति है जो मनुष्य की चेतना और विकास को बाधित करते हैं।

संदर्भ –

[1] शिवमूर्ति. केशर कस्तूरी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1991, पृ. 11–18.
[2] शिवमूर्ति. केशर कस्तूरी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1991, पृ. 95–120.
[3] शिवमूर्ति. केशर कस्तूरी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1991, पृ. 75–94.
[4] शिवमूर्ति. कुच्ची का कानून. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 25–56.
[5] शिवमूर्ति. कुच्ची का कानून. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 85–118.
[6] शिवमूर्ति. त्रिशूल. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1995, पृ. 40–102.
[7] शिवमूर्ति. तर्पण. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. 30–95.
[8] शिवमूर्ति. आखिरी छलांग. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2008, पृ. 48–121.